विधानसभा प्रश्नोत्तर
(मार्च 26, 2018)

भारतवर्ष की आजादी के पश्चात् देश में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा खाद्यान्न के लिए विदेशों पर निर्भरता को मध्यनजर रखते हुए देश में खाद्यान्न उत्पन्न करने के लिए कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई जिसमें कृषि वैज्ञानिकों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। चौ0स0कृ0 हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर की स्थापना 1 नवम्बर, 1978 को हुई थी जोकि वर्तमान में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त व आई0एस0ओ0-2015 द्वारा प्रमाणित शिक्षण संस्थान है।

विश्वविद्यालय के तीन मुख्य कार्य क्षेत्र हैं।

प्रथमः कृषि व सम्बधित विषयों में शिक्षा प्रदान कर मानव संसाधन का विकास।

द्वितीयः हिमाचल प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए कृषि एवं सम्बधित विषयों में शोध तथा

तृतीयः प्रसार शिक्षा कार्य करने का दायित्व। इन दायित्वों का निर्वहन करने हेतु चार महाविद्यालय, 13 क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्र व 8 कृषि विज्ञान केन्द्र कार्यरत हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में मानव संसाधन से सम्बन्धित विश्वविद्यालय से अब तक कुल 6593 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं जिनमें से अधिकांश प्रदेश सरकार के कृषि, बागवानी एवं पशुपालन विभागों में सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। ***वर्तमान में 1555 विद्यार्थी विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।*** गत वर्ष B.V.Sc. & AH तथा B.Sc.(Hons.) Agr. की 137 सीटों के लिए 13600 अभ्यार्थियों ने आवेदन किया था जो विश्वविद्यालय के 40 वर्षों के इतिहास में सर्वाधिक हैं। इससे कृषि विश्वविद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता का पता चलता है।

राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता का अनुमान इससे भी लगाया जा सकता है कि पहली बार (स्थापना से लेकर अब तक) गत वर्ष 193 विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतिस्पर्धात्मक परिक्षाओं में सफलता प्राप्त की। अखिल भारतीय कृषि अनुसन्धान की जूनियर रिसर्च फैलोशिप की परीक्षा का परिणाम 92.7 प्रतिशत रहा। कृषि वैज्ञानिक चयन बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा आयोजित परीक्षा में देश के 73 विश्वविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया जिसमें कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर के 8 छात्रों ने सफलता प्राप्त करके देश के विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों में वैज्ञानिक के पदों पर नियुक्तियां पाकर कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर को दूसरे स्थान पर रहने का गौरव प्राप्त हुआ।

शोध के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने अब तक विभिन्न फसलों की 155 किस्में जारी की हैं तथा 100 से अधिक तकनीकें विकसित की हैं। गतवर्ष धान, तिलहन व सब्जियों की 11 नई उन्नत किस्मों का अनुमोदन किया गया। इस सन्दर्भ में यह उल्लेख करना जरूरी है कि 3 वर्षों से पिछली सरकार के कार्यकाल से लम्बित पड़ी इन किस्मों का अनुमोदन विश्वविद्यालय के बदलते प्रशासन का सफल प्रयास रहा। इसके अतिरिक्त 10 नई तकनीकों को खरीफ व रबी फसलों की सम्पूर्ण सिफारिशों में शामिल किया गया। प्रदेश में आजादी के समय कुल 5.53 लाख हैक्टेयर खेती के क्षेत्रफल से 1.99 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन होता था जो वर्तमान में 8 गुणा बढ़कर 16.80 लाख टन हो गया है। इसी तरह विश्वविद्यालय द्वारा सब्जियों के उत्पादन के लिए विकसित नवीनतम तकनीकों को किसानों द्वारा अपनाते हुए 17 लाख टन का उत्पादन कर प्रदेश को लगभग 3300 करोड़ रूपये राजस्व प्राप्त होता है। यह सब विश्वविद्यालय द्वारा जारी की गई फसलों की उन्नत किस्मों, विकसित तकनीकों तथा इन्हें किसानों तक पहुंचाने में प्रयासरत प्रसार शिक्षा के सुदृढ़ीकरण का ही परिणाम है।

प्रसार शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय अपने मुख्यालय एवं 8 विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा 13 अनुसन्धान केन्द्रों पर प्रतिवर्ष 25-26 हजार किसानों एवं कृषि अधिकारियों को विकसित नवीनतम तकनीकों के बारे में प्रशिक्षित करता है।

यह सर्व विदित है कि प्रदेश की 81 प्रतिशत कृषि योग्य भूमि सिंचाई से वंचित है तथा वर्षा पर निर्भर है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के प्रयोगों से यह सिद्ध किया जा चुका है कि विभिन्न

फसलों की औसतन पैदावार सिंचित भूमि की तुलना में तीन गुणा कम है। हाल ही में हिमाचल सरकार द्वारा अधिकांश भूमि को सिंचाई के अन्तर्गत लाने के उद्देश्य से बजट में विभिन्न सिंचाई परियोजनाओं के अन्तर्गत 625 करोड़ रूपये का प्रावधान किया है जिसके फलस्वरूप खाद्यान्न उत्पादन में प्रदेश न केवल आत्म निर्भर रहेगा अपितु सिंचाई वाले क्षेत्रों में फसलों में विविधीकरण अपनाकर अतिरिक्त (suplus) खाद्यान्न पैदा कर सकेगा जिससे किसानों की आर्थिकी सुदृढ़ होगी।

खाद्यान्न उत्पादन में आत्म-निर्भर हिमाचल प्रदेश को भारत सरकार के कृषि कर्मण पुरस्कार से 17 मार्च, 2018 को चौथी बार पुरस्कृत करना कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों व कृषि विभाग में कार्यरत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व छात्रों तथा प्रदेश के किसानों के कठिन परिश्रम का ही परिणाम है।

कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर भारतवर्ष का पहला विश्वविद्यालय है जहां पर जैविक खेती का अलग विभाग स्थापित किया गया है। पिछले कुछ वर्षों में किसानों का जैविक व शून्य लागत प्राकृतिक खेती की तरफ रूझान बढ़ा है। विश्वविद्यालय ने जहर-मुक्त खेती उत्पादन के लिए फसलों की विभिन्न सिफारिशों का अनुमोदन कर दिया है तथा किसान इन्हें अपनाकर लाभान्वित हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त जलवायु परिवर्तन, कृषि योग्य कम होती भूमि, आवारा पशुओं की समस्या कृषि क्षेत्र में अनेक चुनौतियां हैं जिनके लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक हल ढूढंने में हमेशा अग्रसर हैं।

आवारा पशुओं की समस्या से निजात दिलाने के लिए गठित मन्त्रिमण्डल की उप-समिति और ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए कृषि क्षेत्र के विकास को विशेष अधिमान देते हुए जैविक खेती को बढ़ावा देने एवं कृषि से सम्बधित समस्याओं का हल ढूढंने में कृषि विश्वविद्यालय हमेशा अग्रणी रहा है। विश्वविद्यालय ने इसी वर्ष 25 एकड़ भूमि में शून्य लागत पारम्परिक खेती पर अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण को प्राथमिकता देते हुए 3 करोड़ रूपये की लागत वाली परियोजना पर कार्य शुरू कर दिया है। किसानों की आर्थिकी को दोगुना करने के लिए विश्वविद्यालय ने कृषि आधारित 20 मॉडल विकसित किये हैं।

पिछले कुछ वर्षों से विश्वविद्यालय सेवानिवृत हो रहे विशेषज्ञों एवं अन्य मानव संसाधन तथा वित्तीय अभाव की चुनौतियों से जूझ रहा था जिसकी वजह से वैज्ञानिकों, प्राध्यापकों एवं गैर-शिक्षक कर्मचारियों को समय पर वेतन और सेवानिवृत भत्तों का भुगतान नहीं हो रहा था यही कारण रहे कि विश्वविद्यालय के पिछले प्रशासन में कार्य संस्कृति के अभाव से शिक्षा, अनुसन्धान एवं प्रसार कार्य प्रभावित हुए। गत एक वर्ष 6 महीनों में विश्वविद्यालय के प्रशासन में बदलाव के साथ ही कार्य संस्कृति का सृजन हुआ है। कार्यरत एवं सेवानिवृत कर्मचारियों को समय पर वेतन व पैंशन का भुगतान हो रहा है। लम्बित पड़े भत्तों का भी हाल ही में सरकार ने अतिरिक्त अनुदान राशि उपलब्ध करवाकर 31 मार्च, 2018 तक कार्यरत एवं सेवानिवृत कर्मचारियों का भुगतान किया जा रहा है।

विशेषज्ञों की कमी को दूर करने के लिए विश्वविद्यालय प्रबन्धन बोर्ड तथा हिमाचल प्रदेश सरकार ने पहल करते हुए पिछले महीने ही 40 विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों की नियुक्ति करने की स्वीकृति प्रदान की है।

कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर ने अपने उत्कृष्ट शिक्षण, अनुसन्धान तथा प्रसार कार्यक्रमों के द्वारा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है । हिमाचल प्रदेश की 90 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है और उनमें 62 प्रतिशत लोगों की आजीविका कृषि पर निर्भर करती है। अतः कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर की उपरोक्त उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए इसका सुदृढ़ीकरण न केवल अति आवश्यक है अपितु समय की मांग भी है।

*_*_*